L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assist- professor.
Guest- Teacher.
V.S.J. College, Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsbg2018@gmail.com

B.A III PART.
PAPER- VIII
Psychology (Honours)
TOPIC- Different Views About Dream.

1- स्वप्न के बारे में विभिन्न विचारधारायें !-

स्वप्न की सैद्धान्तिक व्याख्या करने के लिए कई तरह की विचारधारायें उपलब्ध है। जिनमें निम्नांकित तीन प्रमुख है।

(I) मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा !-
(II) सूचना - संसाधन विचारधारा !-
(III) सक्रियण - संश्लेषण सिद्धान्त !-

मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा का प्रतिपादन सिगमंड फ्रायड द्वारा किया गया है। फ्रायड का मत है। स्वप्न अचेतन के बारे में जानने की एक महत्वपूर्ण तरीका है, अचेतन की इच्छापूर्ति अभिव्यक्त करती है। अचेतन में वैसी इच्छायें संचित होती है जो अनैतिक, लैंगिक आदि होती है। तथा जिनकी दिन-प्रतिदिन की जिन्दगी में पूरा सम्भव नहीं हो सकता है। ऐसी इच्छाओं की अभिव्यक्ति स्वप्न में होती है। यही कारण है कि फ्रायड ने स्वप्न को अचेतन का राजकीय मार्ग कहा है। स्पष्ट है कि मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा के अनुसार स्वप्न में व्यक्ति जो कुछ भी देखता है वे सभी अचेतन में दमित इच्छाओं का एक छद्मवेश रूप होता है। इसका मतलब यह हुआ कि अचेतन की दमित इच्छायें अपनी वास्तविक रूप बदलकर स्वप्न में प्रकट होती है। इस वास्तविक रूप या विषय के बारे में स्वप्न विश्लेषण के बाद पता चलता है। फ्रायड के अनुसार स्वप्न के दो विषय होते है, व्यक्त विषय तथा अव्यक्त विषय। स्वप्न के व्यक्त विषय से तात्पर्य स्वप्न के उन विषयों, तथ्यों तथा घटनाओं से होता जिसे व्यक्ति प्रत्यक्षतः स्वप्न में देखता है।

Scanned with CamScanner

तथा कोई टूटने पर उसके बारे में वर्णन करता है।
स्वप्न के आन्तरिक विषय से तात्पर्य स्वप्न में
देखी गई घटनाओं एवं तथ्यों के पीछे छिपे
अर्थ में होता है। जिसका पता हमें स्वप्न
विश्लेषण के बाद होता है। मनोविश्लेषकों यह
इच्छा कि स्वप्न में अपनी विषय आन्तरिक
में दमित इच्छाएं ही होती है। जिसका स्वरूप
प्रायः अनैतिक असामाजिक एवं कामुक होता है।
चेतन के नैतिकतावादियों के कारण ऐसी इच्छाएं
स्वप्न में सीधे अभिव्यक्त नहीं हो पाती है।
फलस्वरूप वे छद्म (disguised form) रूप
धारण करके स्वप्न में व्यक्त होती है। जिस
प्रक्रम द्वारा स्वप्न के आन्तरिक विषय स्वप्न
के व्यक्त विषय के रूप में परिवर्तित होते हैं
उसे स्वप्न प्रक्रम कहा जाता है।

(i) विभिन्न स्वप्न प्रक्रम निम्नलिखित है।

(i) संक्षेपण - इस स्वप्न प्रक्रम में अचेतन की अधिक से अधिक इच्छाएं आपस में संयोजित कर अपना एक लघुरूप या संक्षिप्त रूप बनाकर अभिव्यक्त होती है।

(ii) विस्थापन :- इस स्वप्न प्रक्रम में अचेतन की इच्छाएं संबंधित व्यक्ति या वस्तु के रूप में अभिव्यक्त न होकर किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु के रूप में अभिव्यक्त होती है।

(iii) प्रतीकीकरण :- इस स्वप्न प्रक्रम में अचेतन की दमित इच्छाएं कुछ प्रतीक के रूप में स्वप्न में अभिव्यक्त होती है। जैसे - स्वप्न में छोटे-छोटे जीव-जन्तु एवं कीड़े-मकोड़ों के द्वारा भावी बच्चे की प्रतीकीकरण होता है।

(iv) नाटकीकरण :- इस स्वप्न प्रक्रम में अचेतन की कामुक एवं अनैतिक इच्छायें दृश्यरूप में स्वप्न में प्रकट होती है। जिस तरह नाटक की विभिन्नता की घटनायें एक एक करके क्रमानुसार से हमारे सामने आती है। ठीक उसी तरह से नाटकीकरण में स्वप्न की घटनायें भी बारी बारी से एक-एक करके हमारे सामने आती जाती है। स्वप्न की इन घटनाओं में दृश्य, श्रवण स्पर्श, एवं गंध से सम्बन्धित घटनाएँ अधिक होती है।

(v) गौण विस्तारण :- स्वप्न देखके समाप्त नींद टूटने के तुरंत बाद व्यक्ति स्वप्न में देखे गए हैं। विभिन्न तत्वों, घटना की आदि को आपस में जोड़ने प्रारम्भ कर देता है। इस प्रक्रम को गौण विस्तारण कहा जाता है।

(vi) सूचना संसाधन सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त के अनुसार स्वप्न में व्यक्ति की छिपी इच्छाओं एवं आवेगों को प्रतिबिम्बित नहीं किया जाता है बल्कि स्वप्न रात्रि रात में मस्तिष्क के अंदर उत्पन्न जैविक क्रियाओं की एक झलक मिलती है। इस सिद्धान्त के अनुसार स्वप्न का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता है। व्यक्ति दिन भर कार्य से भिन्न-भिन्न तरह के अनुभवों या सूचनाओं को प्राप्त करता है। स्वप्न में उन्हीं सूचनाओं एवं अनुभूतियों को व्यक्ति संसाधित करता है। इस सिद्धान्त को स्वप्न का संज्ञानात्मक सिद्धान्त भी कहा जाता है। क्योंकि स्वप्न में सूचनाओं का संसाधन, स्मृति तथा समस्या समाधान भी सम्मिलित होता है। नींद के दौरान मस्तिष्क उन सूचनाओं को संसाधित करता है जिसे व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में प्राप्त करता है। हमलोग जिसे स्वप्न में देखते हैं वे कुछ भी नहीं है बल्कि मस्तिष्क में तन्त्रिका प्रक्रियाओं की एक

Scanned with CamScanner

तथा नींद टूटने पर उसके बारे में वर्णन करता है। स्वप्न के आन्तरिक विषय से तात्पर्य स्वप्न में देखे गये घटनाओं एवं तथ्यों के पीछे छिपे अर्थ में होता है। जिसका पता हमें स्वप्न विश्लेषण के बाद होता है। इसकी मान्यता यह है कि स्वप्न में आन्तरिक विषय अचेतन में दमित इच्छायें ही होती हैं। जिसका स्वरूप प्रायः अनैतिक असामाजिक एवं कामुक होता है। चेतन के प्रतिबन्धकों के कारण ऐसी इच्छायें स्वप्न में सीधे अभिव्यक्त नहीं हो पाती है। फलस्वरूप वे छद्म (disguised form) रूप धारण करके स्वप्न में व्यक्त होती है। जिस प्रक्रम द्वारा स्वप्न के आन्तरिक विषय स्वप्न के व्यक्त विषय के रूप में परिवर्तन होते हैं उसे स्वप्न प्रक्रम कहा जाता है।

(I) कुछ स्वप्न प्रक्रम निम्नलिखित है।

(i) संक्षेपण - इस स्वप्न प्रक्रम में अचेतन की अधिक से अधिक इच्छायें आपस में सम्मिलित कर अपना एक लघुरूप या संक्षिप्त रूप बनाकर अभिव्यक्त होती है।

(ii) विस्थापन :- इस स्वप्न प्रक्रम में अचेतन की इच्छायें सम्बन्धित व्यक्ति या वस्तु के रूप में अभिव्यक्त न होकर किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु के रूप में अभिव्यक्त होती है।

(iii) प्रतीकीकरण :- इस स्वप्न प्रक्रम में अचेतन की दमित इच्छायें कुछ प्रतीक के रूप में स्वप्न में अभिव्यक्त होता है। जैसे - स्वप्न में छोटे-छोटे जानवर, जन्तु एवं कीड़े-मकोड़ों के द्वारा भाई बहन का प्रतीकीकरण होता है।

Scanned with CamScanner